दुआ व ज़िक्र के फायदे

यूँ तो दुआ के बेशुमार फायदे हैं, उन में से दो यहाँ नक़ल किये जा रहे हैं:

1. मसरूफ ज़िन्दगी में नमाज़ के इलावा मुख्तलिफ औक़ात में इबादत करने का ज़रिया!
2. अल्लाह तआला की याद की मश्क़, यानी ज़िन्दगी के ज़्यादा से ज़्यादा हिस्से को अल्लाह तआला की याद से आबाद करने का मौक़ा!

हम्द---
पोस्ट::01

तस्बीह कहने की फज़ीलत!

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख्स एक दिन में 100 मर्तबा سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ कहे: उस के गुनाह समन्दर के झाग के बराबर भी हों तो माफ़ हो जाते हैं!

पाक है अल्लाह	سُبْحَانَ اللهِ
और अपनी तारीफ़ के साथ!	وَبِحَمْدِهِ

(Bukhari: 6405)

अल्लाह पाक है सारी कमज़ोरियों, उयूब और गलतियों से, उसी की तारीफ़ है यानी सारी खूबियां उस में हैं!

हम्द का दूसरा माना शुक्र है यानी सारा शुक्र उसी के लिए है!

हम्द ...
पोस्ट:: 02

तस्बीह कहने पर अज्र

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख्स एक मर्तबा سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ कहता है, उस के लिए जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है!

पाक है अल्लाह	سُبْحَانَ اللهِ
(जो) अजमतों वाला है, और अपनी तारीफ़ के साथ!	الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

(तिरमिज़ी: 3464)

سُبْحَانَ यानी मेरा रब ज़ालिम नहीं, नाइंसाफी करने वाला नहीं, बेमक़सद चीज़ों को पैदा करने वाला नहीं, उस के हुक्म में कोई ख़राबी नहीं! मेरी ज़िन्दगी में जो इम्तिहान वाले हालात हैं, उन पर मुझ को कोई शिकायत नहीं!

इआदह (सीरत)

- अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को 40 साल की उम्र में नबी और रसूल बनया!
- मक्का में आप ﷺ ने 13 साल तक दावत दी, इसी को मक्की दौर कहते हैं!
- मदीना में आप ﷺ ने 10 साल तक दावत दी, इसी को मदनी दौर कहते हैं!

इआदह (दुआ)

- दुआ के ज़रिये ज़िन्दगी को अल्लाह की याद से ज़्यादा आबाद रखने का मौक़ा मिलता है!
- सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही 100 मर्तबा पढ़िए और गुनाहों से माफ़ी और अज्र पाइए!!

दुआ व ज़िक्र के फायदे

3. हर वक़्त और हर हाल में अपने दिल का हाल अल्लाह के सामने रखने का ज़रिया!
4. अल्लाह तआला की तरफ से दुआ के जवाब की सूरत में इनआम!
5. ईमान व यक़ीन की ताज़गी!
6. शयातीन और जिन्नात से हिफाज़त!
7. गुनाहों की माफ़ी!

हम्द---
पोस्ट:: 03

बहुत क़ीमती दो कलिमे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: दो कलिमे ज़बान पर हलके फुल्के हैं, मीज़ान में इन्तिहाई वजनी और अल्लाह को बहुत पसंद हैं:

पाक है अल्लाह, और अपनी तारीफ के साथ,	سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ
पाक है अल्लाह, (जो) अज़मतों वाला है!	سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ

(बुख़ारी: 6682)

इन कलिमात को किसी भी वक़्त दोहराना बहुत आसान है!

हम्द ...
पोस्ट:: 04

मीज़ान में इन्तिहाई वज़नी दो कलिमे

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: दो कलिमे ज़बान पर हलके फुल्के हैं, मीज़ान में इन्तिहाई वजनी और अल्लाह को बहुत पसंद हैं:

पाक है अल्लाह, और अपनी तारीफ के साथ,	سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ
पाक है अल्लाह, (जो) अज़मतों वाला है!	سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ

(बुख़ारी: 6682)

अल्लाह क्या ही ख़ूब देने वाला है कि वो थोड़े से काम पर बड़े अज्र से नवाज़ता है!

इआदह (सीरत)

सीरत क्यों पढ़ें?

1. आख़िरत की कामयाबी के लिए!
2. दुनिया की कामयाबी के लिए!
3. रसूल ﷺ से मुहब्बत पैदा करने के लिए

इआदह (दुआ)

- दुआ के ज़रिये हम हर वक़्त और हर हाल में अपने दिल का हाल अल्लाह के सामने रख सकते हैं!
- "सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही सुबहानल्लाहिल अज़ीम" ज़बान पर हलके फुल्के हैं, मीज़ान में इन्तिहाई वजनी और अल्लाह को बहुत पसंद हैं!

दुआ व ज़िक्र के फायदे

शैतान चाहता है कि हम ज़ेहनी तनाव (Stress), मायूसी और गम में हमेशा मुब्तला रहें! इन से छुटकारा हासिल करना हो तो दुआ और ज़िक्र कीजिये!

हम्द---
पोस्ट:: 05

आप ﷺ के पसंदीदा कलिमात

(1)

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मै ये (कलिमात) कहों, तो मुझे ये अमल उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्यारे हैं जिन पर सूरज तुलू होता है!

पाक है अल्लाह,	سُبْحَانَ اللهِ
और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं,	وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
और नहीं कोई (हक़ीक़ी) माबूद सिवाए अल्लाह के,	وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ
और अल्लाह सब से बड़ा है!	وَاللهُ أَكْبَرُ

(Bukhari: 2695)

اَللهُ أَكْبَر: अल्लाह तआला क़ुव्वत, इज़्ज़त, शान व शौकत और हर अच्छी सिफत में सब से बड़ा है!

हम्द---
पोस्ट:: 06

आप ﷺ के पसंदीदा कलिमात

(2)

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: मै ये (कलिमात) कहों, तो मुझे ये अमल उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्यारे हैं जिन पर सूरज तुलू होता है!

पाक है अल्लाह,	سُبْحَانَ اللهِ
और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं,	وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
और नहीं कोई (हक़ीक़ी) माबूद सिवाए अल्लाह के,	وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ
और अल्लाह सब से बड़ा है!	وَاللهُ أَكْبَرُ

(Bukhari: 2695)

اَللهُ أَكْبَر: फज्र की अज़ान सुन कर अगर मै सोता रहूँ तो मै ने किस को बड़ा माना? किस की बात सुनी? अल्लाह की या नफ्स की?

इआदह (सीरत)

सीरत क्यों पढ़ें?

4. दिल में रसूल ﷺ की अज़मत पैदा करने के लिए!
5. सहाबा ए किराम रज़ियाल्लाहू अन्हुम की ज़िन्दगी को जानने के लिए
6. क़ुरआन को समझने के लिए

इआदह (दुआ)

- दुआ व ज़िक्र से हम ज़ेहनी तनाव (stress), मायूसी और गम से छुटकारा पा सकते हैं!
- اَللّٰهُ أَكْبَر: अल्लाह तआला क़ुव्वत, इज़्ज़त, शान व शौकत और हर अच्छी सिफत में सब से बड़ा है!
- اَللّٰهُ أَكْبَر: फज्र की अज़ान सुन कर अगर मै सोता रहूँ तो मै ने किस को बड़ा माना? किस की बात सुनी? अल्लाह की या नफ्स की?

दुआ व ज़िक्र के फायदे

दुआ और ज़िक्र के ज़रिये उम्मीद, सुकून और इत्मीनान हासिल होता है और मोड में हमेशा ठहराव (self control) रहता है!

हम्द---
पोस्ट:: 07

दुनिया व आख़िरत को जमा करने वाली दुआ

जब कोई मुसलमान होता तो रसूलुल्लाह ﷺ उसे नमाज़ सिखाते फिर उसे हुक्म देते कि इन कलिमात से दुआ करे:

ऐ अल्लाह! माफ़ कर दे मुझे	اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ
और रहम फरमा मुझ पर और	وَارْحَمْنِیْ وَاهْدِنِیْ
हिदायत दे मुझे	
और आफियत दे मुझे और रिज्क	وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ
अता कर मुझे	

(Bukhari: 6850)

दुनिया में अगर किसी को बीमारी और मुसीबत से आफियत और रिज्क मिल गया और आख़िरत में गुनाह माफ़ हो गए तो गोया दुनिया व आख़िरत की सारी नेअमतें मिल गईं.

जन्नत का ख़ज़ाना (1)

हम्द---

पोस्ट:: 08

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस! क्या मै तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के मुताल्लिक़ ना बताऊँ? उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्यों नहीं? (ज़रूर बताइए) आप ﷺ ने फ़रमाया: तुम कहो:

नहीं कोई ताक़त (गुनाह से बचने की)	لَا حَوْلَ
और नहीं कोई क़ुव्वत (नेकी करने की)	وَلَا قُوَّةَ
सिवाए अल्लाह के	إِلَّا بِاللَّهِ

(Bukhari: 6409)

अगर हम नेकी करें या गुनाह से बच जाएं तो फ़ख्र ना करें वरना नेकी बर्बाद हो सकती है और गुनाह हो सकता है! याद रखिये कि अच्छे काम खुद से नहीं बल्कि अल्लाह की तौफीक़ व इहसान से होते हैं!

इआदह (सीरत)

सीरत क्यों पढ़ें?

7. क़ुरआन पर अमल करने के लिए!
8. अपने ईमान को और अल्लाह के साथ अच्छी उम्मीदों को बढ़ाने के लिए!
9. दिल की ख़ुशी और सुकून के लिए!

इआदह (दुआ)

- दुआ और ज़िक्र के ज़रिये उम्मीद, सुकून और इत्मीनान हासिल होता है और मोड में हमेशा ठहराव (self control) रहता है!
  - दुनिया व आख़िरत की नेअमतें हासिल करने के लिए "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ" पढ़िए!
- नेकी करना और गुनाह से बचना अल्लाह की तौफीक़ व इहसान ही से मुम्किन है! (لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ)